हिन्दी व्याकरण Full Notes

CLASS – 12TH

भाषा

भाषा- जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को लिखकर या बोलकर व्यक्त करता है ,उसे भाषा कहते हैं |
दूसरे शब्दों में , शब्दों द्वारा मन के विचारों के आदान-प्रदान के साधन को 'भाषा' कहते हैं |
भाषा के तीन रूप हैं (i)मौखिक (ii)लिखित (iii)सांकेतिक

व्याकरण:- व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं जिसके पढ़ने से मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध- शुद्ध लिखना ,पढ़ना और बोलना सीखता है ।

लिपि

भाषा को लिखने के ढ़ंग को लिपि कहा जाता है |
जैसे :- संस्कृत और हिंदी (देवनागरी) ,अंग्रेजी(रोमन) और उर्दू (फारसी) लिपि में लिखी जाती है ।

व्याकरण के खंड

1.वर्ण विचार 2.शब्द विचार 3.वाक्य विचार 4.चिन्ह विचार 5.छंद विचार

वर्ण एवं वर्णमाला

वर्ण - भाषा की मूल ध्वनि और ध्वनि के प्रतीक चिन्ह को वर्ण कहा जाता है ।
या , भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं |

वर्णमाला - वर्णों के क्रमबद्ध समुदाय को' वर्णमाला' कहते हैं |
आधुनिक हिंदी व्याकरण में कुल 52 वर्ण हैं
स्वर वर्ण = अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ए,ऐ,ओ,औ (11)
स्पर्श वर्ण = कवर्ग ,चवर्ग,टवर्ग,तवर्ग,पवर्ग (25 वर्ण)
अन्तः स्थ व्यंजन = य,र,ल,व् (4)
ऊष्म व्यंजन = श,ष,स,ह (4)
संयुक्त व्यंजन = क्ष,त्र,श्र और ज्ञ
द्विगुण व्यंजन = ड,ढ अयोगवाह=अं,अः

स्वर के प्रकार

1.मूल स्वर – अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ओ
2.संयुक्त स्वर – ऐ(अ +ए),औ(अ+ओ)

मूल स्वर के दो भेद होते हैं

ह्रस्व स्वर – अ,इ,उ,ऋ- के उच्चारण में कम समय लगता है |
दीर्घ स्वर – आ,ई,ऊ,ए ,ऐ ,ओ ,औ के उच्चारण में दुगुना समय लगता है |
स्वर वर्ण - स्वर वर्ण उसे कहा जाता है जिसका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से होता है।
जैसे :- अ, आ,इ, ई,उ,ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

व्यंजन वर्ण- जो 'वर्ण'स्वर की सहायता से बोला जाता है |
अर्थात, जिस वर्ण का उच्चारण स्वर के सहयोग से होता है, उसे 'व्यंजन' कहा जाता है ।
जैसे:- क, ख, च, छ, य, ह इत्यादि

'संयुक्ताक्षर ' दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं ।
जैसे - क् +ष = क्ष , त् +र = त्र
ज् +ञ= ज्ञ , श् + र = श्र

उच्चारण स्थान

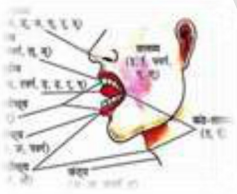

कण्ठ - कवर्ग, अ, आ, ह - कंठ्य वर्ण
तालु - चवर्ग, इ, ई, य, श - तालव्य वर्ण
मूर्धा - टवर्ग, र, ऋ,ष - मूर्धन्य वर्ण
दन्त - तवर्ग, ल,स - दंत्य वर्ण
ओष्ठ - पवर्ग,उ,ऊ - ओष्ठ्य वर्ण
नासिका - न, म, ण, ञ, - नासिक्य वर्ण

शब्द- विचार

'व्याकरण' के जिस भाग में शब्दों का भेद,अवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन किया जाता है, उसे 'शब्द- विचार 'कहा जाता है ।

शब्द - दो या दो से अधिक वर्णों की सार्थक मेल से शब्द बनते हैं |
जैसे - घर ,कमल ,बालक, सीता इत्यादि

व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द चार प्रकार के होते हैं
(i) तत्सम - हिंदी में संस्कृत के मूल शब्द को तत्सम कहते हैं
जैसे – जगत ,फल,पुष्प ,पुस्तक ,पृथ्वी
(ii) तद्भव – तत्सम के बिगड़े हुए रूप को तद्भव कहते हैं
जैसे – आग ,कुबड़ा ,कपूर इत्यादि

तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग

अष्ट	आठ
ओष्ठ	ओंठ
चन्द्र	चाँद
दधि	दही
दुग्ध	दूध
नग्न	नंगा
रात्री	रात

(iii) देशज-देश की बोलचाल की भाषा में पाए जानेवाले शब्द 'देशज' कहलाते हैं|

जैसे –डिबिया ,फुनगी,तेंदुआ ,लोटा ,पगड़ी इत्यादि

(iv) विदेशज –जिन शब्द का जन्म विदेश में हुआ है ,उन्हें 'विदेशज 'कहते हैं|

जैसे – हॉस्पिटल,डॉक्टर,बुक ,टेबुल ,आराम ,इनकार,मुहब्बत,हुस्न,मेहमान,इत्यादि

रचना या बनावट की दृष्टि से तीन प्रकार की होते हैं

(i) रूढ़ - जिन शब्दों के खंड किये जाने पर कोई अर्थ न निकले ,उन्हें रूढ़ कहते हैं

जैसे – नाक ,कान ,ज्ञान

(ii) यौगिक- ऐसे शब्द ,जो दुसरे शब्दों के मेल से बने हैं और जिनके

सभी खंड सार्थक होते हैं ,'यौगिक कहलाते हैं |

जैसे – घुडसवार ,विद्यासागर,हिमालय ,विद्यालय इत्यादि

(iii)यौगरुढ़ - ऐसे यौगिक शब्द ,जो साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष

अर्थ ग्रहण करें ,'योगरूढ़ कहलाते हैं |

जैसे – लम्बोदर ,दशानन ,चंद्रशेखर इत्यादि |

3.रूपान्तर की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं

(i)विकारी शब्द – जिनके रूप लिंग ,वचन ,कारक और पुरुष के अनुसार बदलते हैं,विकारी कहलाते हैं

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) विशेषण (iv) क्रिया

(ii)अविकारी शब्द – जिनके रूप नहीं बदलते हैं,अविकारी कहलाते हैं|

अविकारी को 'अव्यय' भी कहते हैं

(i) क्रिया विशेषण (ii) सम्बन्धबोधक (iii) समुच्चय बोधक (iv) विस्मयादि बोधक

संज्ञा

किसी प्राणी, वस्तु ,स्थान और भाव के नाम को संज्ञा कहा जाता है

जैसे:- राम, कृष्ण, कमरा ,भारत, बिहार, मिठास इत्यादि

संज्ञा के पांच भेद है

व्यक्तिवाचक संज्ञा :- राम, हिमालय, गंगा ,पटना

जाति वाचक संज्ञा :- गाय ,फूल, आदमी, औरत

भाववाचक संज्ञा :- बुढापा, चतुराई ,मित्रता

समूह वाचक संज्ञा :- सेना, सभा, मेला, कक्षा

द्रव्यवाचक संज्ञा :- सोना, चांदी, तेल, घी

सर्वनाम

नाम के बदले जिस शब्द का प्रयोग किया जाए उसे सर्वनाम कहते हैं

जैसे - मैं,आप, तुम, हमलोग इत्यादि

सर्वनाम के छः भेद हैं |

हिंदी में कुल 11 सर्वनाम हैं |

सर्वनाम के भेद

(i) पुरुष वाचक सर्वनाम :- मैं ,आप,वह, वेलोग

(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम :- यह ,वह,

(iii) अनिश्चय वाचक सर्वनाम :-कोई ,कुछ

(iv) संबंध वाचक सर्वनाम :-जो,सो

(v) निजवाचक सर्वनाम :- स्वयं,खुद ,आप ही

(vi) प्रश्नवाचक सर्वनाम :- कौन ,क्या

विशेषण

विशेषण- संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं |

जैसे :- राम काला है | वह सुन्दर है |

यहाँ , काला और सुंदर विशेषण है |

विशेष्य – विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताता है ,उस शब्द को विशेष्य कहा जाता है |

जैसे :- राम काला है | वह सुन्दर है |

यहाँ , राम और वह की विशेषता बताई गई है | अत: राम और वह विशेष्य कहलाएगा

प्रविशेषण - विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं |

विशेषण के चार भेद हैं

गुणवाचक विशेषण:-काली टोपी ,गोल चेहरा, भूखा पेट

परिमाणवाचक विशेषण:- थोड़ा दूध, पूरा आनंद, और घी

संख्यावाचक विशेषण :- चार रुपए, तीस दिन ,सात महीने

सार्वनामिक विशेषण :- कोई पुस्तक , यह पुस्तक, वह नौकर

ध्यान दें - जिसे गिन सकते हैं उसमें संख्यावाचक और जिसे नहीं गिन सकते उसमें परिमाण वाचक होता है |

क्रिया

क्रिया – जिस शब्द से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं ।

जैसे- खाना, पीना ,दौड़ना, हंसना, पढ़ना इत्यादि

क्रिया का मूल धातु है | जैसे – चल ,पा,हस,देख इत्यादि

क्रिया के दो भेद हैं -

(i) सकर्मक क्रिया- जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े ,उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं ।

अथवा ,जिस क्रिया के साथ कोई कर्म हो या कर्म की सम्भावना हो

जैसे- हरी आम खाता है। वह लिखता है |

(ii) अकर्मक क्रिया :- जिस क्रिया का फल कर्ता पर पड़े उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे- बालक सोता है। सोना ,रोना ,हँसना इत्यादि

कुछ और प्रमुख क्रियाएँ

सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायक होती हैं,सहायक क्रिया कहलाती हैं |

जैसे - वह खाता है। मैंने पढ़ा था ।तुम जा रहे हो।

(इसमें- है ,था,रहे हो सहायक क्रिया है)

प्रेरणार्थक क्रिया

जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करें ,वे प्रेरणार्थक कहलाती हैं

जैसे- पढ़वाना ,लिखवाना ,उठवाना , इत्यादि

(इसमें सामान्यत: वाना लगा रहता है)

पूर्वकालिक क्रिया

जब किसी क्रिया को करने से पूर्व ही कोई दूसरी क्रिया की जाए तो ,उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं ।

जैसे- वह खाकर सो गया, मैं दौड़कर बैठ गया इत्यादि

(यहाँ खाना और दौड़ना पूर्वकालिक क्रिया है)

काल

काल - क्रिया के जिस रुप से समय का बोध होता है, उसे 'काल 'कहते हैं|

जैसे- वह जा रहा है(वर्तमान)। मैं दौड़ रहा था (भूतकाल)

हम लोग स्कूल जाएंगे (भविष्यत काल)

काल तीन प्रकार के होते हैं –

(1.)वर्तमान काल- जिससे क्रिया के वर्तमान में होने का बोध हो , उसे वर्तमान काल कहते हैं ।

जैसे- वह पढ़ता है । तुम जा रहे हो ।मैं लिखता हूं ।

वर्तमान काल के तीन भेद हैं -

(i)सामान्य वर्तमान - इससे वर्तमान में होनेवाले सामान्य क्रिया का बोध होता है ।जैसे- वह पढ़ता है।वह जाता है

(ii) संदिग्ध वर्तमान - इससे वर्तमान में होने वाली क्रिया में संदेह का बोध होता है ।

जैसे- वह जाता होगा।वह पढ़ता होगा ।

(iii) तात्कालिक वर्तमान - इससे क्रिया के तुरंत और लगातार होने का बोध होता है ।

जैसे - वह जा रहा है। वह पढ़ रहा है ।

2. भूतकाल

जिससे किसी कार्य के हो जाने पर समय के बीत जाने का बोध हो ,उसे 'भूतकाल 'कहते हैं ।जैसे - वह पढ़ता था । हम जा रहे थे । मैंने लिखा |

भूतकाल के छ: हैं -

(i) सामान्य भूत- इससे क्रिया के समाप्त हो जाने का बोध होता है ।

जैसे- मैंने खाया । वह रोया । मैंने देखा